प्रश्न- महाराज साहिब, क्या आप संन्यासी हैं?

उत्तर- अपने ग्रन्थ "कलीद-उल-कल्ब" में ओम जी ने इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया है-

---

1.

"हमें तुम क्यों कहा यारा संन्यासी, संन्यासी बन के जमपुर कौन जासी।"

☞ मुझे तुम क्यों संन्यासी कहते हो? केवल संन्यासी बन जाने से कोई स्वर्ग (मोक्ष) नहीं पा सकता।

2.

"कलु में नाम मुख, न भेख मुख है, गुरु नानक की राय भेख दुख है।"

☞ इस कलियुग में न तो केवल नाम (उपाधि/ख्याति) ही मुख्य है, न ही भेष (कपड़े या रूप) ही महत्वपूर्ण है।
गुरु नानक जी का मत है कि केवल भेष धारण करना दुःखदायी है।

3.

"न बनता हूँ बैरागी खाक मल कर, मरे दुश्मन कोई धूनी में जल कर।"

☞ मैं खाक (राख) मलकर बैरागी नहीं बनता, न ही धूनी जलाकर अपने शत्रु को मारने वाला साधु हूँ।

4.

"न बन ब्राह्मन बताऊँ पीर मंगल, न तीर्थ तीर की न चाह जंगल।"

मैं ब्राह्मण बनकर , पीर या मंगल (मंत्र–जप, शुभ मंत्र) बताने वाला नहीं हूँ।
मुझे न तो तीर्थ-तीर्थ घूमने की इच्छा है और न ही जंगल में जाकर तपस्या करने की चाह है।

5.

"ये भारी भेष का है भूत भाई, फंसे उसमें वह निरा ही ऊत भाई।"

☞ हे भाई! यह भारी-भरकम भेष केवल दिखावा है।
जो इसमें फंस जाता है वह मूर्ख ही कहलाता है।

6.

"न बेशक वर्ण में कुछ गरज है जी, वले रखना निहायत फ़र्ज़ है जी।"

☞ हाँ, यह सच है कि समाज में वर्ण (जाति) का थोड़ा महत्व है,
लेकिन उससे भी बढ़कर अपना कर्तव्य निभाना सबसे ज़रूरी है।

7.

"बरन बाहर बतूँ जाहिर करे जो, न मारे मौत मुँह काली मरे वो।"

☞ जो व्यक्ति अपनी जाति/धर्म से बाहर जाकर केवल दिखावा करता है,
वह मौत से नहीं बच सकता, बल्कि बदनाम होकर मरता है।

8.

"छत्र धारी ब्राह्मण वैश्य शूद्र, बरन जा पूछ किसी पंडित के तू दर।"

☞ चाहे कोई क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य या शूद्र हो,
अगर जाति पूछनी है तो पंडित (ज्ञानी) से पूछनी चाहिए, न कि केवल दिखावे से।

9.

"अगर साकन कहीं मफतूह पढ़ेगा,"

☞ यदि कोई सच्चे मन से शास्त्रों/ज्ञान को पढ़ेगा और समझेगा,
तो उसे असली सत्य का मार्ग मिल जाएगा।

🔹 **"खता तेरी करम तेरा लड़ेगा"**

अर्थ: इंसान जो गलती (खता) करता है, उसी का फल उसे अपने कर्मों के अनुसार मिलेगा। यानी पाप या गलती का हिसाब किसी और से नहीं, बल्कि उसके अपने ही कर्म उससे लड़ेंगे।

🔹 **"खुदी को दूर कर न कर बरन दूर"**

अर्थ: अपनी 'अहंकार' (खुदी) को दूर करो, जाति-पाति (बरन/वर्ण) को नहीं। यानी असली समस्या जाति नहीं, बल्कि अहंकार है।

◈ **"कहा हम वेद के बमूजिब' बदस्तूर"**
अर्थ: हम तो वही कहते हैं जो वेदों के अनुसार है और जो हमेशा से (बदस्तूर = उसी तरह, निरंतर) कहा गया है।

साधना की युक्ति

◈ **"बदिल मिल ज दिलबर यही चाहिये, न बन सन्त बन को भटक जाई** ए।**"**
सच्चे प्रियतम (ईश्वर) से हृदय का मिलन होना ही सबसे ज़रूरी है। केवल संत बनकर जंगलों में भटकना व्यर्थ है।

◈ **"जो अब के ज़माने के हैंगे फकीर, वो मांगे हैं घर-घर, कहाँवे हैं पीर।"**
आजकल के फकीर असली पीर नहीं रहे। वे घर-घर जाकर भीख माँगते हैं।

◈ **"कहै और को दास खुद गुरु बने, रुपया लंगोटी में खावें चने।"**
दूसरों को तो उपदेश देते हैं कि 'गुरु बनो', लेकिन खुद बस रुपयों से लंगोटी बाँधकर चने खाते रहते हैं।

◈ **"ली धार को पीन सिर पर जटा, झुके आन सावन की जैसे घटा।"**
लंबी जटाएँ बाँधकर सिर पर रख लीं, जो सावन के बादल जैसी झुकी दिखती हैं।

◈ **"जो करना था संकल्प से प्यार ना, ये क्या थी ज़रूरत जटा धारणा।"**
अगर सच्चा संकल्प प्रेम (भक्ति) का करना था तो इन जटाओं का दिखावा क्यों?

◈ **"बैरागन पकड़ हाथ, मल खाक सिर, मुंडा कर हुए या पुरी और गिर।"**
सिर मुंडाकर, हाथ में डंडा लेकर, खाक मलकर पुरी-गिरि जैसे संन्यासी बने।

◈ **"कहाने लगे आपको परमहंस, मड़ी मठ किये याद कर तर्क वंस।"**

लोग आपको *परमहंस* (महान संत/साधु) कहने लगे।
आपने मठ-मंदिर (धार्मिक स्थान) बनवाए और वंश-परंपरा के आधार पर (तर्क देकर) उनकी यादगार स्थापित की।

◈ **"पढ़ी संस्कृत, नीज़ भाष पढ़ी, वले गगन त्रिकुटी न दृष्टि चढ़ी ।।"**
केवल भाषा और शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है।
यदि मन और दृष्टि ईश्वर की ओर नहीं लगती, तो असली आत्मज्ञान नहीं मिल सकता।

◈ **"कमाई करी न तप कभी, न बर्मी के कूटे मरे सर्प कभी।"**
न तपस्या की, न कठिन साधनाएँ कीं, न ही किसी तरह के आत्म-संयम से गुज़रे।

◈ **"न तन को फकत मन को था मारना, न पानी का गलना अगन सड़ना।"**
असली साधना शरीर को कष्ट देना नहीं, बल्कि मन को जीतना है। न तो पानी पीने से वंचित होना जरूरी है, न आग में जलना।

❖ **"उन्हाले को आतिश सियाले को आब, कर्म कष्ट देही न आतम मिलाप।"**

जीवन में मौसम और परिस्थितियाँ शरीर को कष्ट देती रहती हैं, पर जब तक मनुष्य अपने कर्म शुद्ध नहीं करता और सच्चे मार्ग पर नहीं चलता, तब तक आत्मा का परमात्मा से मिलन संभव नहीं है।

❖ **"मुंडाने-भभूती लगाने से भी, गरज भेख तन से ना हो शुद्ध जी।"**

सिर मुंडाने और भस्म मलने से तन-पवित्र नहीं होता।

❖ **"फकीरी में इननी कोई लोड़ ना, फकीरी फक्त मन से मन जोड़ना।"**

फकीरी के लिए इतना दिखावा आवश्यक नहीं। असली फकीरी है मन से ईश्वर के मन को जोड़ना।

❖ **"सो मन जोड़ने की विधि और है, न वह तौर है न यह तौर है।"**

मन को ईश्वर से जोड़ने की विधि और है। न तो बाहरी तौर-तरीके से और न इन ढोंगों से यह संभव है।

❖ **"तू मन मोड़, देह जोड़ दम से दिला, युगम जोड़ नेत्र न मुतलक हिला।"**

अपने मन को सँभाल कर एकाग्र करो, शरीर को स्थिर रखो। साँस को साधकर हृदय को शांत करो।
दोनों नेत्रों को भौंहों के बीच केंद्रित करो और उन्हें बिल्कुल भी न हिलाओ।

❖ **"सितारे लगे टूटने ज़ आस माँ , पड़ी नज़र न दीदनी ना गहाँ ।"**

दुनिया में बड़ी हलचल और परिवर्तन (सितारे टूटना) होते रहते हैं, लेकिन मनुष्य को कहीं स्थायी ठिकाना (आधार) नहीं मिलता।
सच्चा ठिकाना केवल परमात्मा में ही है।

❖ **"अगर रास्त हृदय कमल हो पड़े, मुक्तगढ़ में बेशक जभी जा चड़े।"**

यदि साधक हृदय-कमल (मन के भीतर) को रास्ता बनाए तो वह सच्चे मुक्तलोक तक पहुँच सकता है।

❖ **"ज़ किस्मत किसी का हो सुध कल्ब, वह पुरफैज भाँडा हुआ लब-ब-लब ।"**

जिसका हृदय (दिल) हर दिशा से जागरूक (सचेत) हो जाता है,
उसका मन/शरीर ईश्वर की कृपा से ऐसा भर जाता है जैसे बर्तन किनारे तक भरा हो।

❖ **" न दिन देख मुतलिक कभी रात देख, भजन बंदगी को , उमर सिर्फ सेख ।"**

न दिन को देखो, न रात को देखो (यानी समय की चिंता मत करो)।
भजन–बंदगी (ईश्वर की उपासना) हर समय करनी चाहिए।
क्योंकि पूरी ज़िंदगी का असली मक़सद केवल सीखना और भक्ति करना ही है।

❖ **"अगर मारना मन का मंज़ूर है, तो मिल सिंह-ज्वाला से क्या दूर है।"**

यदि मन पर विजय पानी है तो गुरु (सिंह-ज्वाला) का आश्रय क्यों न लिया जाए?

❖ **"गुरु सिंह-ज्वाला का दर्शन करो, अमर हो जीयो और जीते-मरो।"**

गुरु का साक्षात्कार करो, तभी अमर जीवन मिलेगा और मृत्यु में भी जीवन का स्वाद आएगा।

❖ **"जन्म-जून फिर छूट जाए तभी, अगर न हो निश्चा मिलो फिर कभी।"**

सच्चा मार्ग तभी मिलेगा जब बार-बार के जन्म-मरण से मुक्ति का दृढ़ निश्चय हो।

❖ **"कहा दास ने यह बखुद आज़मा, मैं खुद आज़माया तू खुद आज़मा।"**

दास (कवि/संत) कहता है: मैंने यह मार्ग खुद आजमाया है, तू भी खुद आज़मा ले।

◈ **"अगर वर्ष दो चार उनकी रकाब, गुजारें जगें ज्ञान गुरु का शताब।"**
यदि कोई व्यक्ति गुरु की सेवा या संगति में केवल दो–चार वर्ष भी बिता ले,
तो वह गुरु के ज्ञान का सौ वर्षों (शताब्दी) जितना लाभ प्राप्त कर लेता है।

सद्गुरु के लक्षण

◈ **"सुनियो लुकाई संसार दे लोको, तुम्हें साधु अवदूतां वाले लक्खन सुनाविए।"**
हे संसार के लोगों! सुनो—मैं तुम्हें सच्चे साधु और अवधूत (सन्यासी) के लक्षण बताता हूँ।

◈ **"चैतन कर मन को, ले मारग गगन को, अटल जोत जगन को, जतन कर पाविए।"**
अपने मन को जागृत करो, आकाश-मार्ग (आत्मिक मार्ग) पर चलो, उस अटल ज्योति (ईश्वर-प्रकाश) को पाने का प्रयत्न करो।

◈ **"होवना फकीर शुद्ध रखना शरीर, कर योग माही भोग देह रोग न लगाविए।"**
जो फकीर (सच्चा साधक/भक्त) बनना चाहता है, उसे अपने शरीर को शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए। योग और संयम का पालन करना चाहिए।
भोग (इन्द्रियों की अति-तृप्ति) से दूर रहना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक भोग-विलास शरीर में रोग उत्पन्न करते हैं।

◈ **"रात को, सवेरे को, दोपहर नाले शाम, दिलों होऐ कै मलंग, नाम रब दा ध्याविए।"**
रात-सवेरे-दोपहर-शाम हर समय, मलंग (निर्मल) बनकर दिल से ईश्वर का नाम जपते रहो।

◈ **"त्रिकुटी में जग मग जोत का जगाट, ओ थे बन्ध के कमर हो निशिंग पहुँच जाविए।"**
त्रिकुटी (भृकुटि/आँखों के बीच का स्थान, जहाँ साधक ध्यान करता है) में प्रभु की जगमगाती ज्योति का प्रकाश है। वहीं मन को बाँधकर (ध्यान को स्थिर करके) यदि साधक ध्यान करता है, तो वह "निशिंग" अर्थात् परम गन्तव्य / परमात्मा की शरण तक पहुँच जाता है।

◈ **"जोग वाले ढंग, एह शरीर कच्ची बंग, ऐ थे धीरज को धार, सहजे कदम टिकाविए।"**
शरीर मिट्टी की झोंपड़ी जैसा है। योग के ढंग में धैर्य रखो और धीरे-धीरे कदम जमाकर साधना करो।

◈ **"आवे नहीं रीत, यह प्रीत नाहीं उदय होवे, नूरशाह में पीर दस्तगीर पास जाविए।"**
जब भीतर सच्ची प्रेम-रीति (ईश्वर से प्रीत) जागृत नहीं होती, और आत्मा में प्रेम का उदय नहीं होता, तब साधक को चाहिए कि वह किसी सच्चे पीर (गुरु) के पास जाए। क्योंकि पीर दस्तगीर (संत, मार्गदर्शक) ही आत्मा को नूर (ईश्वर का प्रकाश) की ओर ले जाते हैं।

◈ **"पढ़ना पढ़ावना नाही कार ऐह फकीरां वाली, लड़ना मैदान मन वीर से लड़ाविए।"**
फकीरी केवल किताबें पढ़ने-पढ़ाने का काम नहीं है। असली फकीरी है मन के मैदान में अपने विकारों से वीरता से लड़ना।

◈ **"होके निरछल, कल मांही निर्बल, सुन गल गुफ्तार मन गुरां दे बसाविये।"**
निर्छल (निर्मल) बनो, कलियुग की कमजोरियों से बचो, और अपने मन में गुरु की वाणी को बसाओ।

◈ **"जड़ बाज बेलड़ी, आकाश विचलाऐ फल, सोसनी कपूरी लाल गैब दे लगाविए।"**
जिस वृक्ष की जड़ बेलड़ी (कमज़ोर/ढीली) हो, उसका फल आकाश में लटकता है (मिलना कठिन होता है)।
इसी प्रकार सोसनी, कपूर, लाल जैसे अमूल्य रत्न केवल गैब (अदृश्य / अलौकिक लोक) में ही प्राप्त होते हैं।

◈ **"हर्ष सोग त्याग, करो सैर इस बाग दी, दिखाय के अचम्भा मन बावरा बनाविए।"**
दुनिया के आकर्षणों को मोह में फँसकर मत देखो, इन्हें वैराग्य की दृष्टि से देखो। यह सब माया है जो मन को भटकाती है।

◆ **"खुदी के ना खैश, के न रूप, के न वेष के, हमेशा सहज सुन्न में मकान कर जाविए।"**

अहंकार, इच्छाएँ, रूप-सौंदर्य और बाहरी भेष छोड़ो। सदैव सहज ध्यान (सुन्न अवस्था) में अपना घर बना लो।

◆ **"जे होवे लोड़ असनान, नहीं छड़ना मकान, त्रिकुटी तीर्थ के नीर निरमल में नहाविए।"**

यदि तुम्हें सचमुच स्नान (पवित्रता) की आवश्यकता है, तो इसके लिए घर–मकान (संसार) छोड़ने की जरूरत नहीं है। सच्चा स्नान तो त्रिकुटी के तीर्थ (भृकुटि–मध्य, ध्यान का स्थान) के निर्मल नीर (अंतरात्मा की पवित्र ज्योति/ध्यान की धारा) में है।
वहीं स्नान करने से आत्मा शुद्ध होती है।

◆ **"दास तोड़ फांस, हो जगत से निराश, बन ऐसे अवधूत निर्वाण पद पाविए।"**

दास (कवि/संत) कहता है: संसार के बंधन तोड़ो, जगत से आशा छोड़ो, तभी असली अवधूत बनकर निर्वाण को पाओगे।

◆ **"मन वाली मार कर, गुरु पहले धार कर, सेवा बारम्बार कर चरण सीस नवाईए।"**

मन को वश में करो, पहले गुरु को धारण करो, बार-बार सेवा करो और चरणों में शीश नवाओ।

◆ **"मन के मकर छड, फकीरों से चित गढ़, जावने से पहले हर काज को संवारिये।"**

मन की चालाकियाँ छोड़ो, फकीरों (सच्चे संतों) से चित्त जोड़ो, और मृत्यु आने से पहले अपने हर काम को संवार लो।

प्रश्न- आपके गुरु कौन हैं? कैसे हैं?

उत्तर- ज्वाला सिंह जी मेरे गुरु हैं। तभी तो दास जी की अति

◆ **"सुर्ख़रु हैं, दास के सद्गुरु पूर्ण परमात्मा हैं।"**
मेरे सद्गुरु मुझे सम्मानित और सफल बनाते हैं। वे स्वयं पूर्ण परमात्मा हैं।

◆ **"जगे किसमत कभी ताआला मदद दे, करो कृपा खुशी बस बे-अदद दे।"**
जब इंसान की किस्मत जागती है, तो ऊपर वाला (ताआला = परमेश्वर/अल्लाह/ईश्वर) खुद मदद करता है।
वह अपनी कृपा बरसाकर, इंसान को अनगिनत (बे-अदद) खुशियाँ दे देता है।

◆ **"कराऊँ मैं तुझे दर्शन गुरु का, दहन् महाराज का डब्बा दूरों का।"**

मैं चाहता हूँ कि तुझे गुरु महाराज का दिव्य दर्शन कराऊँ, जो महान और दूरस्थ खजाना है।

◆ **"करें खन्दा गिरें गैंदे गुलों के, इमाम जाहिदों शाहे आकिलों के।"**
जब इमाम (सच्चे मार्गदर्शक, संत) प्रकट होते हैं, तो जैसे गेंदे और फूलों की पंखुड़ियाँ मुस्कराते और झरते हैं, वैसे ही संसार में रौनक और सौंदर्य छा जाता है। वे जाहिदों (त्यागियों) के इमाम और आक़िलों (बुद्धिमानों/ज्ञानी पुरुषों) के राजा होते हैं।

◆ **"ज़मीन मौलूद पोठवार है जी, ज मुद्दत अब सकूनत बार है जी।"**
यह धरती ईश्वर की बनाई हुई है और यह संसार उसकी शक्ति और ठहराव का स्थान है।

◆ **"निवारण भय, भी तारण हार गुरु हैं, मुसफ़्फ़ा पाक गोहर साफ़ दूर हैं।"**

गुरु भय और दुःख का निवारण करने वाले हैं। वे निर्मल, पवित्र और कीमती मोती जैसे हैं।

❖ **"है सूरत सिंह की, मूरत मुरारि, करें तालिब की बस मतलब बरारी।"**
उनका स्वरूप शेर जैसा वीर और मुरारी (भगवान) जैसा दिव्य है। वे अपने शिष्यों की प्रार्थना स्वीकार करते हैं।

❖ **"बहर घट में व्यापक नूर करके, दर उनका जानता हूँ तूर करके।"**
मैं जानता हूँ कि हर घट (जीव) में उनका नूर (प्रकाश) व्याप्त है, और वही प्रभु तूर पर्वत की तरह प्रत्यक्ष होते हैं।

❖ **"उन्हीं की मेहरबानी से हुआ है, यह दिल मेरा जै मन्त्र जो मुआ है।"**
गुरु की कृपा से ही यह मेरा मन सच्चे मंत्र और ज्ञान से जाग्रत हुआ है।

❖ **"परिपूर्ण बड़े परमात्मा हैं, गुजर गाहिश चौबारा सातवाँ है।"**
वे ही पूर्ण परमात्मा हैं, उनका निवास सातवें आकाश में है।

❖ **"वही बेत-खुद माही महल है, खिर्द को न जगह, बुद्ध बातिल को महल है।"**
उनका महल आत्मा के भीतर है। वहाँ तर्क या झूठी बुद्धि का कोई स्थान नहीं।

❖ **"हर इक आरिफ का वो गढ़ कोट है जी, उसी की दास को बस ओट है जी।"**
हर ज्ञानी का सहारा वही है। दास (भक्त) को भी उसी की शरण ही सुरक्षा देती है।

❖ **"है पुरियाँ सात, ज़ेरो-बर कलासन, जहाँ परमात्मा पूरन का आसन।"**
सात लोक हैं, और उन सबसे ऊपर परमात्मा का आसन है।

❖ **"बृजनायक वहीं यारां बिराजे, बखुद करते इशारा आप लाजै।"**
वहीं बृजनायक (श्रीकृष्ण) भी विराजमान हैं और स्वयं ही इशारा करते हैं।

❖ **"यकीन तुझको अगर आवे नहीं है, धर्मशाला में क्यों जावे नहीं है।"**
अगर तुझे यकीन नहीं है तो धर्मशाला (गुरुस्थान) में जाकर सुन क्यों नहीं लेता?

❖ **"अगर जायें, सुनें बानी गुरु की, वले पहचान हो खालिस दुरां की।"**
अगर वहाँ जाकर गुरु की बानी सुनो, तो असली पहचान और अनुभव प्राप्त होगा।

❖ **"यकीन पुख़्ता है, सद्दे सिकन्दर, बिला शक बे शक आवे न शक अन्दर।"**
उन पर मेरा विश्वास अटूट है, जैसा सिकन्दर (अलेक्ज़ेंडर) का दृढ़ निश्चय था। इसमें कोई शक नहीं।

❖ **"गुरु मेरा चुना खत्म-उल-यकीन है, कि चूँ तरकां निरा खत्म-उल-मरसलीं है।"**
मेरा गुरु 'ख़त्म-उल-यकीन' है (संपूर्ण विश्वास का अंत), जैसे पैग़म्बर 'ख़त्म-उल-मरसलीन' हैं।

❖ **"मैं उनको क्यों कहा खत्मूल-यकीन है, कि हासिल उनको अब हक़-उल-यकीन है।"**
मैं उन्हें 'ख़त्म-उल-यकीन' इसलिए कहता हूँ क्योंकि उन्हें 'हक़-उल-यकीन' (परम सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव) प्राप्त है।

प्रश्न- गुरु सिंह ज्वाला के हैं कौन गुर, पवित्र बनूं सुन सुना दास

उत्तर- ओम जी ने बापू ज्वाला सिंह के सद्गुरु ठाकुर जी के विषय में फरमाया

🔷 **"अमल दारिये सिंह रणजीत में, जो ब्रह्म पूज संतों की था प्रीत में।"**
सिंह जैसे पराक्रमी गुरु, जो रणजीत में विजयी हैं, वे ब्रह्म के पूजक और संतों से प्रीत करने वाले हैं।

🔷 **"विष्ण मूर्ति संत प्रकट भये, किया दर्स जिसने मुक्तपुर गए।"**
संत स्वयं विष्णु स्वरूप होकर प्रकट हुए। जिसने उनका दर्शन किया, वह मुक्तपुर (मोक्ष-धाम) को प्राप्त हुआ।

🔷 **"ज़ लाहौर मशिरक कीं जानिब बदाँ, चके कस्बा नरवड़ यक आसन जहाँ।"**
लाहौर और पूरब दिशा में, नरवड़ नामक स्थान पर गुरु का पवित्र आसन है।

🔷 **"बारुए अटारी दिगर जा हजार, हैं आसन जगत गुरु के बस बेशुमार।"**
गुरु महाराज के असन (धाम/स्थान) अटारी से लेकर हजारों जगहों तक फैले हुए हैं।

🔷 **"नरक नार नर वो पड़े जाशिताब, करे रफ्तगां में जो उनका हिसाब।"**
जो उनके उपदेश से विमुख हो जाता है, वह नरक में जाता है। और जो उनके हिसाब (मार्ग) पर चलता है, वह मुक्ति पाता है।

🔷 **"वो हैं आद अवतार ब्रह्म ज्ञान के, सदा अमर वेदों से जा पूछ ले।"**
वे ब्रह्मज्ञान के आद्य अवतार हैं। उनकी अमरता का प्रमाण वेदों में भी मिलता है।

🔷 **"वले ज्ञान के यार होना कठिन, न सकता है हर एक सुखदेव बन।"**
लेकिन सच्चा ज्ञान पाना आसान नहीं। हर कोई सुखदेव (महान ऋषि) नहीं बन सकता।

🔷 **"यकीं सबको ज़ेरे जमीं आब है, वले जहत मुतलक को चाह बाब है।"**
हर किसी को थोड़ा-बहुत विश्वास है, पर असली (पूर्ण) दिशा की चाह बहुत कम लोगों को होती है।

🔷 **"मिले पानी यानी ज़ चाह यार मन, अर्ज़ का है परदा दिगर जा कठिन।"**
सच्चे यार (ईश्वर/गुरु) की चाह से ही जीवन जल (ज्ञान) मिलता है, लेकिन यह परदा (भ्रम) कठिनाई से ही हटता है।

🔷 **"इसी तौर पूरन निरंकार जान, वले सूफियों से मिले यह ज्ञान।"**
यही जानो कि वे पूर्ण निरंकार (निर्गुण परमात्मा) हैं। और यह ज्ञान सूफियों की परंपरा से भी मिलता है।

🔷 **"जहालत का बोझ उसके दिल से घटा, नज़र मेहर आया, मिटी जब घटा।"**
जब अज्ञान का बोझ गुरु हटाते हैं, तब उनकी कृपा से बादल छँट जाते हैं और ज्ञान का प्रकाश दिखता है।

🔷 **"गर्ज जात मौला हर दिल पुर अस्त, न दानद ख़जफ हा के दानद दुरस्त।"**
मौला (प्रभु) हर दिल में मौजूद है। परंतु अज्ञानी मिट्टी-पत्थर को पहचानता है, असली हीरे को नहीं।

❖ **"न यह ताक़त दास दां यारे मन, गुरु की है कृपा, गुरु का है धन।"**
मेरे पास अपनी कोई ताक़त नहीं है। सब कुछ गुरु की कृपा और गुरु का ही धन है।

❖ **"जगत गुरु, जगत गुरु, जगत गरु बदां, तू गर यार हिन्दू बगर मुसलमां।"**
गुरु ही सच्चे जगत गुरु हैं। वे न हिन्दू हैं, न मुसलमान—बल्कि सबके एक समान गुरु हैं।

---

1. ईश्वर की प्राप्ति की युक्ति

"गुरु जुगती' बताई हम कमाई, न दिन को दम न निस को नींद आई।"

☞ गुरु ने जो साधना की युक्ति बताई, उसी को अपनाकर मैंने परिश्रम किया। इस अभ्यास में इतना मन लग गया कि न दिन में चैन मिला, न रात को नींद आई।

2.

"कला दाबी अजब एक रेल की जी, बयक इन्जन दो गाड़ी मेल की जी।
लगन की लकड़ी सुरति पिला जल, शताबी कर शताबी दें चला चला।"

☞ यह साधना एक रेलगाड़ी की तरह है। इसमें दो इंजन हैं – एक है "लगन" और दूसरा है "स्मरण"। इंजन को जल (ईंधन) चाहिए, जो है ध्यान और लगन। इस साधना की गाड़ी शताब्दी एक्सप्रेस जैसी तीव्र गति से चलने लगती है।

3.

"उड़ी जैसे गिरे तारा जमीं पर, गयी उड़ती हुई कहीं की कहीं पर।"

☞ साधना में आत्मा जैसे एक तारा आकाश से टूटकर गिरता है, वैसे ही देह से निकलकर कहीं और उड़ जाती है।

4.

"गई उस देश जो बे आब है जी, निराला मुल्क फिर सैराब' है जी।"

☞ आत्मा जिस लोक में पहुँचती है, वह निर्जल (बिना पानी वाला) देश है, परन्तु वही वास्तव में अद्भुत और सुकून देने वाला लोक है।

5.

"कठिन वह देस, सुन्दर सर जमीं पर, फरिश्ते पर ना मारे हैं वहीं पर।
सरर इक ओर कर जब गोर देखा, नयी धरती फलक फिर और देखा।"

☞ वह देश (आध्यात्मिक लोक) बड़ा कठिन और रहस्यमय है। वहाँ सुंदरता है, वहाँ फरिश्ते रहते हैं, पर वहाँ तक आसानी से पहुँचना मुश्किल है। जब मैंने ध्यान और दृष्टि को और ऊपर लगाया, तो मैंने एक नई धरती और एक नया आकाश देखा।

ईश्वर का स्वरूप-

1.

☞ ***"मिलोनी की जो मन मन्तर चश्म की, झटापट पड़ गयी सुध बुध ख़सम की।"***

अर्थ: जैसे ही मन को ईश्वर से मिलने वाला मंत्र मिला, तुरंत मनुष्य अपनी सुध-बुध खो बैठा, यानी उसका ध्यान पूरी तरह ईश्वर में लग गया।

2.

☞ ***"झलक झिल मिल छमाछम मेघ बर से, कड़क बिजली चमक जावे नज़र से।"***

अर्थ: ईश्वर का स्वरूप ऐसे है जैसे मेघों की बरसात और बिजली की चमक — बहुत ही आकर्षक और अद्भुत।

3.

☞ ***"अजब वर्दी चतुंरगी बना के, लगे शोले-चमकने दम दमा को।"***

अर्थ: ईश्वर का स्वरूप चारों ओर रंग-बिरंगी वर्दी (आभा) से ढका हुआ है, मानो हर क्षण वह अग्नि और प्रकाश से जगमगा रहे हों।

4.

☞ ***"गगन स्थान क्या तारा चढ़ा है, गोया एक नूर का पुतला खड़ा है।"***

अर्थ: ईश्वर का स्थान आकाश जैसा ऊँचा है। वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो एक तेजस्वी प्रकाश-प्रतिमा खड़ी हो।

5.

☞ ***"चमकता क्या दमकता दम-ब-दम है, न बादल का है बुध बातिल का ग़म है।"***

अर्थ: ईश्वर का प्रकाश हर पल जगमगाता है। उसमें बादलों की तरह कोई बाधा या अंधकार नहीं आ सकता।

6.

☞ ***"छुपे बादल से न वह नूर यानी, छुपाये बुध बातिल साफ मानी।"***

अर्थ: ईश्वर का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। अज्ञान या झूठ (बातिल) भी उस सत्य को नहीं ढक सकता।

7.

☞ ***"जहाँ में जो कोई है बुध बातिल, हैं खुद मक्तूल अपने आप क़ातिल।"***

अर्थ: इस संसार में जो भी असत्य और अज्ञान में डूबा है, वह स्वयं अपने आप को हानि पहुँचाने वाला है।

8.

☞ ***" नफा नुकसान की न उनको खबर है, अज़ाआं दास मुस्तसना मगर है।"***

ज़्यादातर लोगों को अपने भले-बुरे की समझ नहीं होती, पर एक सच्चा सेवक या भक्त ही ऐसा होता है जो इस ज्ञान से संपन्न और जागरूक होता है।

---

9. "फिक्र गर ज्ञान का घोड़ा दौड़ा वे, है दम किस में कदम का दम उठावे।"

जब मनुष्य का चिंतन और विचार ज्ञान से जुड़ जाता है, तो उसका जीवन गति पकड़ लेता है। वह जितना आगे बढ़ता है, उतना ही बल और आत्मविश्वास प्राप्त करता है।

☞ **"अगर जाहिल उम्र भर खाक छाने, नहीं मुमकिन के रम्ज़े पाक जाने।"**

सिर्फ़ बाहरी दिखावे, साधना या कठोर तप करने से परमात्मा या आध्यात्मिक सच्चाई का ज्ञान नहीं मिलता। उसके लिए ज्ञान, समझ और सच्चे गुरु की कृपा आवश्यक है।

ओम जी का निवास स्थान-

1.

☞ ***"मेरा रहना है जिस मंदिर में याराँ, करें गर यक दफ़ा उसका नज़ारा।"***

अर्थ: मेरा ठिकाना उस मंदिर में है। यदि कोई सच्चे मन से एक बार उसका दर्शन कर ले, तो उसे दिव्य अनुभव होगा।

2.

☞ ***"नज़र आवे न आवे था नज़र जो, हमीं किबला हमीं चाहिए था दर जो।"***

अर्थ: ईश्वर का दर्शन हर किसी को हो भी सकता है और नहीं भी। लेकिन जिसे देखने की लगन है, उसके लिए दरवाज़ा (मार्ग) खुल जाता है।

3.

☞ ***"सरर मंदिर के अन्दर ग्यब के हैं, महल बेशक ये उस लारेब के हैं।"***

अर्थ: मंदिर के भीतर एक रहस्यमय और ग़ैब (अदृश्य) महल है। यह निश्चित ही उसी (ईश्वर) का है, जिसमें कोई संदेह नहीं।

4.

☞ ***"न उसमें रात-दिन की कुछ ख़बर है, न उसमें रंज न खोफे क़बर है।"***

अर्थ: उस लोक में न तो दिन-रात का कोई भेद है, न ही वहाँ दुःख, भय या मृत्यु का डर है।

5.

☞ ***"हज़ारों मेहर, सदहा माह चमक्कन, ठमा ठम नूर के तारे दमक्कन।"***

अर्थ: वहाँ हजारों सूरज और चाँद जैसे प्रकाशमान आभा है। चारों ओर प्रकाश के तारे जगमगाते हैं।

6.

☞ ***"कभी ग्रहन से सूरज मात हो जाये, अजायब रात में इक रात हो जाये।"***

अर्थ: जैसे कभी ग्रहण से सूर्य ढक जाता है या अंधेरी रात छा जाती है, वैसे ही वहाँ कभी-कभी अजीब रहस्य दिखाई देते हैं।

7.

☞ ***"फटे पौ फिर कभी हो जा उजाला, उजाला हो झटपट फिर काला। ।"***

इसमें दिन और रात के परिवर्तन का चित्रण किया गया है। जैसे ही भोर फटती है, उजाला फैल जाता है, लेकिन यह उजाला स्थायी नहीं है। समय के साथ वही उजाला धीरे-धीरे अंधकार (रात) में बदल जाता है।

8.

☞ ***"वो काला नूर वाला क्या प्याला ,यह क्या चाला कि काला दे उजाला।"***

बाहरी दृष्टि से जो साधारण या तुच्छ (काला प्याला) लगता है, वही अंदर से दिव्यता, प्रेम और आत्मज्ञान का प्रकाश देता है। यह ईश्वर की अनोखी लीला है कि कभी अंधकार से भी उजाला मिल जाता है।

9.

☞ ***"लगा जगने अजब दीपक निराला, बिना तेल और बाती दे उजाला।"***

अर्थ: वहाँ एक अद्भुत दीपक जलता है, जो बिना तेल और बाती के प्रकाश देता है। (यह ईश्वर का अनंत प्रकाश है।)

10.

☞ ***"इधर धुन बाँसुरी की बज रही है, उधर बिजली चमक कर गज रही है।"***

अर्थ: एक ओर मधुर बाँसुरी की ध्वनि गूंज रही है, और दूसरी ओर बिजली की चमक जगमगा रही है।

11.

☞ ***"अजब मोती अजब हीरे अजब लाल, कोई महरम बढ़ूँ जाने नहीं हाल।"***

अर्थ: वहाँ अनमोल मोती और लाल (रत्न) जैसे अद्भुत खज़ाने हैं, परंतु उनका वास्तविक रहस्य कोई-कोई ही जान पाता है।

12.

☞ ***"नज़र बालिग अगर सर्राफ होवे, परख इन होरों की साफ होवे।"***

अर्थ: केवल वह साधक जो पूर्ण रूप से परिपक्व और पारखी है, वही इस दिव्य स्वरूप को पहचान सकता है।

13.

☞ ***"अगर जाहिल उम्र भर ख़ाक छाने, नहीं मुमकिन कि राजए पाक जाने।"***

अर्थ: लेकिन जो अज्ञानी है, चाहे पूरी उम्र भटकता रहे, वह ईश्वर के पवित्र रहस्यों को कभी नहीं समझ सकता।

"राज-ए-खुफ़िया"(हृदय कमल का रास्ता)

1.

☞ ***"अजब एक बात सुन दीगर निराली, कलीद-ए-कुफ़्ल सरर यार वाली।"***

अर्थ: यह एक अनोखा और रहस्यमय रहस्य है। यह मानो उस ताले की चाबी है जो परमात्मा के द्वार (राज-ए-खुफ़िया) को खोलती है।

2.

☞ ***"नली एक सिर तले केला कली है, शमा रोशन बतूं उसके जली है।"***

अर्थ: मनुष्य-शरीर में नीचे की ओर एक नली (सुषुम्ना) है। जब उसमें ऊर्जा (कुण्डलिनी) प्रज्वलित होती है तो यह शमा (दीपक) की तरह प्रकाशमान हो उठती है।

3.

☞ ***"जग मग जगत बिन रोगन जगे है, सिखर में सुन्न के शोला दगे है।"***

अर्थ: बिना किसी तेल या बाती के यह दिव्य दीपक जगमगाता है। इसका प्रकाश सहस्रार (मस्तिष्क के शिखर) तक पहुँचता है और वहाँ एक अदृश्य अग्नि (आध्यात्मिक ऊर्जा) प्रकट होती है।

4.

☞ ***"नली को देह तली हिम्मत खुली कर, हवा उल्टी फिरा सुल्टी चली कर।"***

अर्थ: इस नली (सुषुम्ना) को खोलने के लिए साहस और साधना चाहिए। जब श्वास का उल्टा प्रवाह (प्राणायाम) साधा जाता है, तभी ऊर्जा ऊपर उठती है।

"यह बाहर बादे जा अंगुश्त बाराँ , हटे फिर सर्द हो चूँशर्म साराँ ।"

जब इंसान रूहानी प्रेम या ईश्वर की मस्ती (बादे जा) में डूबा होता है तो उसका हृदय गर्मजोशी और जोश से भर जाता है। लेकिन जैसे ही यह दिव्य अनुभव हटता है, उसका मन फिर शांत, ठंडा और संकोच से भरा हो जाता है।

5.

☞ ***"बना सुरती सबुचा बाँध डोरी, ज़ चश्मा मेहर भर कर मन कटोरी।"***

अर्थ: जब ध्यान (सुरति) को नियंत्रित कर सही दिशा में बाँधा जाता है, तब सूर्य-जैसी ऊर्जा मन के प्याले को भर देती है।

6.

☞ ***"पीओ सैराब हो जुगति लगाओ, बली बयन कर नली बाला उठाओ।"***

अर्थ: जब साधक सही युक्ति से ध्यान करता है तो आत्मा तृप्त हो जाती है। उस समय नली (सुषुम्ना) से ऊपर उठने वाली शक्ति का अनुभव होता है।

7.

☞ ***"नली कादिर खुली गर कर दिखावै, सरर गैबी सब उसमें नज़र आवै।"***

अर्थ: जब यह नली (कुण्डलिनी मार्ग) पूरी तरह खुल जाती है, तो अदृश्य (ग़ैबी) रहस्य साधक के सामने प्रकट हो जाते हैं।

"लगे अम्बर सितारे रंग न्यारे, सियाह सब्ज़ ओ कपूदी लाल प्यारे।"

आकाश में तारे ऐसे लगते हैं मानो वे नए-नए रंगों में सजे हों। कोई काला दिखता है, कोई हरा, कोई नीला और कोई लाल – और ये सब रंग देखने में बड़े ही प्यारे लगते हैं।

8.

☞ ***"न सुध-बुध को अकल को होश है यहाँ , सरर गैबी का बिल्कुल जोश है वहाँ।"***

अर्थ: उस अवस्था में साधक न तो दुनियावी होश में रहता है, न ही बुद्धि का काम चलता है; केवल दिव्य रहस्य और आनंद का अनुभव होता है।

गगन में हो मगन वाँ जा चढ़े हैं, सरर सब गैब के जिस जा पड़े हैं।

यह पंक्ति बताती है कि जब इंसान भौतिक जगत से ऊपर उठकर ईश्वर की ओर मगन होता है, तो वह दिव्य रहस्यों से जुड़ जाता है। यह आत्मा की ऊँचाई और ईश्वर से मिलन का प्रतीक है।

9.

☞ ***"अगर जाहिल उम्र भर ख़ाक छाने, नहीं मुमकिन के रम्ज़े पाक जाने।"***

अर्थ: जो अज्ञानी है और साधना नहीं करता, वह चाहे पूरी ज़िंदगी व्यर्थ भटकता रहे, ईश्वर के पवित्र रहस्य को कभी नहीं समझ सकता।

भाग 2 : "दास की तवाजो"

1.

☞ ***"निरा बे नीर' हम तुझको दिया शीर, बिलोने की किसी से सीख तद्वीर।"***

अर्थ: हे साधक! मैंने तुझे वह अमृत (ज्ञान) दिया है। जैसे दूध को मथकर मक्खन अलग किया जाता है, वैसे ही साधना से आत्मा का अमृत अलग होता है।

2.

☞ ***"अक़्ल आरास्ता कुन बुध व्यारा, बिलोकर दूध कर मक्खन न्यारा।"***

अर्थ: बुद्धि को स्थिर और ध्यानपूर्ण बनाओ। जैसे दूध से मथकर मक्खन अलग होता है, वैसे ही ध्यान से आत्मिक सुख मिलता है।

3.☞ ***"कोई गर खावे, न खुशकी पास आवे, शमा आई अंधेरा भाग जावे।"***

अर्थ: जो साधक इस अमृत को पीता है, उसे न दुःख मिलता है, न सुख की कमी। जैसे दीपक आते ही अंधेरा भाग जाता है

4.☞ ***"यकीन आवे नहीं तो आज़माना, किसी से ला ज़रा जमन जमाना।"***

कवि कहना चाहता है कि जीवन के सत्य को केवल सुनकर नहीं समझा जा सकता। अगर किसी बात पर भरोसा न हो, तो अनुभव करके देख लो— दुनिया और समय ही सबसे बड़े गवाह हैं।

5.☞ ***"हिफ़ाज़त बस वले बिल्ली से रखना, न पी पागल करे कहीं ज़र्फ सखना।"***

अर्थ: लेकिन साधक को सावधानी भी रखनी चाहिए। ध्यान और साधना को व्यर्थ बातों (या सांसारिक मोह) से बचाना चाहिए।

6.

☞ ***"जमे गर फिर जमा सरसों हथेली, न कूढ़ा दास तेरा यार बेली।"***

अर्थ: यदि तेरा ध्यान सही तरह से स्थिर हो गया, तो समझ ले कि तेरा साधक-मित्र (गुरु) तुझसे खुश है और तू सही मार्ग पर है।

सद्गुरु की अपार लीला -अगाध माया है

☞ **"यह कल की बात मुझको याद सब है,गुरु इक न दीगर पास जब है।"**

➞ इसका मतलब है – यह बात मुझे कल की तरह साफ़-साफ़ याद है, जब गुरु एक नदी के पास थे।

☞ **"गुरां एक जाम जादू का दिया है,दिया दाते लिया, लेकर पिया है।"**

➞ गुरु ने मुझे एक जादुई प्याला (ज्ञान का प्याला) दिया। मैंने उस दैवीय दान को लेकर पिया।

☞ **"इधर पीना उधर सीना गुराँ का,दहन मेरा दफीना है दुरों का।"**

➞ जब मैंने वह प्याला (गुरु का दिया ज्ञान/अनुभव) पिया, तो ऐसा लगा कि मेरा हृदय गुरु से मिल गया। मेरे सीने के अंदर जैसे अनमोल खज़ाना खुल गया।

☞ **"कहीं होकर वे सुर वे बाअस व ऊर, न खोये दुर सिया इस वास्ते कुर।"**

➞ गुरु कभी किसी वीर या पराक्रमी रूप में दिखाई देते हैं, तो कभी बहुत कोमल और प्रेममय। लेकिन वे हमेशा अपने शिष्य को संभालते हैं ताकि शिष्य मार्ग न खोए।

☞ **"नहीं मैदान तुम घोड़ा दौड़ाओ,ब अंदर बून कदम सहजे उठाओ।"**

➞ यहाँ समझाया गया है – आध्यात्मिक मार्ग कोई बाहरी युद्धभूमि नहीं है कि घोड़े दौड़ाए जाएँ। यह तो आंतरिक साधना है। इसे धैर्य से, धीरे-धीरे, हर कदम संभलकर चलना चाहिए।

☞ **"कठिन डाढ़ी रची है दास बानी, कि यानी कर नीहायत सोच मानी।"**

लेकिन "दास" (शिष्य) को अपनी वाणी और कर्म दोनों में दृढ़ रहना चाहिए। गुरु की आज्ञा और साधना को मानकर ही मंज़िल मिलती है।

योग-साधना –

☞ **"सही साफ़ मधानी नाफ करो, दम कल्ब कलाम का नेता है।"**

➞ योग-साधना करने के लिए सबसे पहले अपने *श्वास-प्रश्वास (साँस)* को संतुलित करो। साँस ही हृदय और मन को नियंत्रित करने वाली प्रमुख शक्ति है।

☞ **"गुण ज्ञान का माखन निकल पड़े, ला ज़ोर जिगर में जेता है।"**

➞ जब साधक योग करता है, तो जैसे दूध से मथकर मक्खन निकलता है, वैसे ही साधना से *ज्ञान और गुण* का सार (माखन) बाहर आता है। यह ज्ञान साधक के हृदय को विजयी और उज्ज्वल बनाता है।

☞ **"मिट की तन कर सुरत से बन कर, जो हो जुगत जतन कर लेत्ता है।"**

➞ यदि साधक अपने तन-मन को स्थिर करके, एकाग्रचित होकर साधना की सही विधि करता है, तो वह उच्च आध्यात्मिक उपलब्धि पा लेता है।

☞ **"मन मस्त न दास हो क्यों कजी, गुरु ज्वाला सिंह तत्त्व वेत्ता है।"**

➞ जब गुरु *ज्ञानरूपी ज्वाला* हैं और वे शेर की तरह निर्भय होकर तत्व (सत्य) को जानने वाले हैं।
गुरु की शक्ति से शिष्य को सही मार्ग और विजय अवश्य मिलती है।

परलोक में शुभ कर्म साथ जाते हैं-

☞ **"सवा नेज़े पै जब सूरज झुकेगा, जिस्म चूँ चोबतर सबका घुकेगा।"**

➞ मृत्यु के समय जब जीवन का सूर्य ढल जाएगा, तब शरीर निर्जीव होकर मिट्टी में मिल जाएगा।

☞ **"छतर बन कर अमल उस वक्त साया, करें नेकों के सर पर मिसल दाया।"**

➞ उस समय केवल अच्छे कर्म (नेकी) ही छाया बनकर मनुष्य का साथ देंगे और दया की तरह उसे ढक लेंगे।

☞ **"बजेंगे जब दमामे मौत वाले, लगेगी तब खबर पड़ेंगे पाले।"**

➞ जब मृत्यु का नगाड़ा बजेगा, तब मनुष्य को असली एहसास होगा कि उसने जीवन में क्या पाया और क्या खोया।

☞ **"कोई उस वक्त फिर न काम आवे, जगत में तू जिन्हों से नेह लगावे।"**

➞ उस घड़ी रिश्तेदार, मित्र, परिवार – कोई भी काम नहीं आएगा, जिससे मनुष्य ने सारा मोह रखा था।

☞ **"फना संसार आखिरकार जब है, जगत में फिर तेरा ग़म ख़ार कब है।"**

➞ यह संसार नश्वर है, अंततः सब मिट जाना है, इसलिए इसका दुख करना व्यर्थ है।

☞ **"भजन बिना भागने देती नहीं है, यह रिश्वत भी कभू लेती नहीं है।"**

➞ ईश्वर की भक्ति के बिना कोई मुक्ति नहीं मिलती। वहाँ रिश्वत, चालाकी या धन काम नहीं आता।

☞ **"वह सच्चे साफ़ साईं की कचहरी, न उसका है कोई मित्र ना बैरी।"**

➞ ईश्वर की न्याय-सभा में सब समान हैं। वहाँ न कोई मित्र है, न शत्रु – केवल कर्मों का लेखा-जोखा है।

☞ **"खुदी को छोड़कर तज दे गुमाना, गरीबी बन्दगी बिन किन छुड़ाना।"**

➞ अहंकार (खुदी) को छोड़ दो, अभिमान का त्याग करो, क्योंकि केवल विनम्रता और ईश्वर की भक्ति ही मुक्ति दिलाती है।

☞ **"पकड़ कर गर्द कर दे मार मन को, चलो सीधे खुदी वाले वतन को।"**

➞ मन को काबू में करके, अहंकार को मिटाकर उस परमात्मा की ओर चलो, जो सच्चा घर है।

☞ **"खुदी से पाखबर खुद हो खुदा तूं, ना इकदम इक पलक सायत जुदा तूं।"**

➞ अहंकार से मुक्त होकर आत्मा को जानो – वही परमात्मा है। आत्मा और ईश्वर कभी अलग नहीं होते।

☞ **"जिन्हों का काम लेना नाम का है, यही बेहतर कि यह तन चाम का है।"**

➞ यह शरीर केवल नाम और दिखावे के लिए है, असली मूल्य आत्मा और कर्म का है।

यकीं जानी न रहना जान जानी , नमाणों का नमाणी अन्त पानी ।

इस संसार में न विश्वास (यकीन) स्थायी है, न जीवन (जान) सदा रहने वाला है। सबसे नम्र और विनम्र व्यक्ति भी अंततः नष्ट हो जाता है और सबका अंत पानी (मृत्यु / मिट्टी) में ही होता है।

☞ **"तू कर ले बन्दगी और मान कहना, भजन में हर घड़ी हर पलक रहना।"**

➞ इसलिए जीवन में ईश्वर की भक्ति करते रहो, हर पल उसका स्मरण करो।

अध्यात्म तथा जीवन सम्बन्धी अनुभव-

☞ **"निकल घर से किया जो कुछ बतावां, सही और साफ़ जानी को सुनावां।"**

➞ मैं अपने घर (अंतरात्मा) से जो अनुभव लेकर निकला हूँ, वही साफ़ और सच्चाई के साथ सबको सुनाता हूँ।

☞ **"गगन गुरु देव का मिल की गवाही, पवन के बैल की जा सुनन बाही।"**

➞ आकाश और वायु को गुरु मानकर, मैंने उनके अनुभव और संदेश को सुना और समझा।

☞ **"ज़राअत ताब में बे आब है जी, कि यानी वह सदा सैराब है जी।"**

➞ दुनिया की चमक-दमक (धन-संपत्ति) तो तृष्णा से भरी है और कभी संतोष नहीं देती, परंतु सच्चा ज्ञान और भक्ति हमेशा आत्मा को तृप्त करते हैं।

☞ **"जमीं बिन जल बिना हम आप देखी, खुदा जाने है कितनी माप देखी।"**

➞ जैसे भूमि बिना जल के अधूरी है, वैसे ही इंसान बिना ईश्वर-ज्ञान के अधूरा है। यह रहस्य खुदा ही जानता है।

☞ **"यक़ी की जा नहीं तालिब को तब तक, न दिखलावें बिना आँखों यार जब तक।"**

➞ साधक को तब तक यक़ीन नहीं होता जब तक वह अपने नेत्रों से सच्चा अनुभव (ईश्वर का दर्शन) न कर ले।

☞ **"उठाये हासिलों के गंज भारी, बड़े मनमस्त बेसुध बस खुमारी।"**

➞ जिसने सच्चे आध्यात्मिक खजाने को पा लिया, उसका मन आनंद और मस्ती से भर जाता है, जैसे वह नशे में हो।

☞ **"फ़तह का काफ़िया कब पा रफ़ा हो, शिकस्ते काफ़िया की चल दफ़ा हो।"**

➞ जहाँ ईश्वर-ज्ञान मिलता है, वहाँ जीत-हार जैसी बातें महत्व नहीं रखतीं।

☞ **"ख़बर नहीं ज़ेर है या पेश है जी, जो अपना है तेरे सब पेश है जी।"**

➞ मुझे इस दुनिया के तर्क और व्याकरण से क्या लेना? जो कुछ मेरा है, वह सब प्रभु के सामने अर्पित है।

☞ **"भला बाक़ी बयां कर यार किस्सा, है कुछ नक़दी पे या इकरार हिस्सा।"**

➞ और क्या कहूँ? यह सब अनुभव किसी सौदे या नक़दी जैसा नहीं, बल्कि आत्मिक सच्चाई है।

☞ **"मेरे हम राज़ कुछ देते नहीं बाज', बड़ा दाता वहाँ का साहिबे ताज'."**

➞ मेरे मित्र या लोग मुझे कुछ नहीं दे सकते, असली दाता तो वही ईश्वर है जो सबका मालिक है।

☞ **"ख़ुशी से ख़ुश गुज़ारी दम बरारी, करें दीगर भजन माधो मुरारी।"**

➞ सच्चा सुख केवल हरि-भजन और माधव-मुरारी के स्मरण में है।

☞ **"ज़ मन्तर मार सागर मन किलेगा, मेरी पैदा से तो फिर हिस्सा मिलेगा।"**

➞ मन का सागर अगर मंत्र और भजन से भर जाएगा, तो जन्म का असली उद्देश्य पूरा होगा।

☞ **"तू बो दिल की ज़मीं में नाम खेत्ती, करें हासिल नफ़ा इस नाम सेत्ती।"**

➡ अपने दिल की ज़मीन पर ईश्वर का नाम बोओ, इससे अनंत लाभ होगा।

☞ **"हरि के नाम से होवे हरी है, न ख़्वाहिश आब की रत्ती ज़री है।"**

➡ हरि-नाम से ही आत्मा पवित्र और हरी-भरी हो जाती है, फिर सांसारिक इच्छाओं का कोई महत्व नहीं रह जाता।

☞ **"जपेगा नाम गर सिमरेगा सांई, तो हासिल गंज ग़ंदम ज्ञान पाई।"**

➡ अगर तू हरि-नाम जपेगा और ईश्वर को याद करेगा, तो ज्ञान का अनमोल खज़ाना प्राप्त होगा।

☞ **"जगे क़िस्मत मिले गर ज्ञान का गंज, तो जल जायें गमो रंज ओ सुखन-संज।"**

➡ अगर भाग्य से ज्ञान का खज़ाना मिल गया, तो सारे दुख, चिंता और झंझट जलकर समाप्त हो जाते हैं।

- **बीन के तीन तारां -**
- ***"अजब इक बीन की तीन तारां, बंधे जी जून उन तारां हजारां"***
  → यह संसार एक अद्भुत बीन की तरह है। इसमें तीन तार (गुण) हैं, जिनसे असंख्य जीव बंधे हुए हैं।
- ***"नहीं टूटें वह सदमे से तबर से, अगर टूटें तो कुछ तेरे सबर से"***
  → ये बंधन तलवार या ज़ोर से नहीं टूटते। ये केवल धैर्य, साधना और सद्गुरु की कृपा से ही टूट सकते हैं।
- ***"सबर निष्काम होने को कहे हैं, दरां जाएं की तत्व वेत्ता कहे हैं।"***
  → धैर्य और निष्काम भाव ही इस माया के बंधनों को काट सकते हैं। तत्वज्ञानी यही बताते हैं।
- ***"यकीं कर देख नकदी दे सुला के, कि यानी पूछ ले पंडित बुला के।"***
  → विश्वास रखो, सचाई को आज़माकर देखो। विद्वानों और संतों से पूछो, वे भी यही कहेंगे।
- **"खबर इस्लाम सूफी नाम रक्खा , मिले मुद्दत हुई मिल राम रक्खा ।"**
- →सूफ़ी संत ने इस्लाम स्वीकार करके अपना नाम बदल तो लिया, लेकिन उन्हें मिले हुए (सच्चे) राम अर्थात् परमात्मा से मिलन किए बहुत समय बीत चुका है।
- ***"सबर जिसको अवामुल नास जाने, निशाने पस्त हिम्मत जान जाने।"***
  → जो धैर्य नहीं रख पाता, उसे लोग कमजोर और नाकाम समझते हैं।
- ***"न इससे कार मतलब और से है, न पानी से है मतलब दौर से है।"***
  → इस सत्य का संबंध किसी बाहरी चीज़ से नहीं, बल्कि भीतर की साधना और धैर्य से है।
- ***"पियो पी मस्त होवे दास दस तूं, कमाया माल क्या सच बोल बस तूं।"***
  → साधक को नामरस (ईश्वर-स्मरण) पीकर आनंदित होना चाहिए। सांसारिक धन-दौलत मायावी है, असली खजाना केवल नाम और सत्य है।

जीवनोपयोगी शिक्षा-

- ***"खुदा को याद करना बंदगी है, यह तन तेरा निरा ही गंदगी है।"***
  ☞ असली पूजा (बंदगी) ईश्वर को याद करना है। यह शरीर अस्थायी और नश्वर है, आखिरकार मिट्टी बन जाएगा।
- ***"कि एक दिन खाक हो जायेगा यह तन, तेरे डेरे लगेंगे जंगल व वन।"***
  ☞ एक दिन यह शरीर मिट्टी में मिल जाएगा। तेरे बनाए घर-आलिशान महल जंगल बन जाएंगे।

- ***"पड़ा घबरायेगा फिर हाथ मल-मल, पुकारेगा नरक की आग जल-जल।"***

  ☞ जब मृत्यु आएगी और नरक का भय सामने होगा, तब इंसान हाथ मलकर पछताएगा।
- ***"गुज़र जब बलेड़ा जावे प्यारे, पड़ेंगे खौफ तब सिर पर तुम्हारे।"***

  ☞ जब मौत का समय आएगा, तब डर सिर पर सवार होगा।
- ***"तू दिल दुनिया से क्यों ऐसा लगाया, न एक सायत कभी रब नूं ध्याया।"***

  ☞ तूने अपना दिल सिर्फ दुनिया से लगाया, लेकिन एक क्षण भी भगवान का ध्यान नहीं किया।
- ***"खर्च लाखों न एक दमड़ी कमाया, जन्म पा आदमी दा बिर्था गंवाया।"***

  ☞ तूने लाखों खर्च कर दिए, लेकिन असली कमाई (ईश्वर का नाम, पुण्य) का एक पैसा भी अर्जित नहीं किया। इस तरह तूने मनुष्य जन्म व्यर्थ गंवा दिया।
- ***"कजी को, काफिया को और कमी को, न देखो देख फुरसत दो दमी को।"***

  ☞ दूसरों की गलतियाँ, दोष या कमियाँ मत देखो। अपने दो पल की फुरसत को सही काम (ईश्वर-स्मरण) में लगाओ।
- ***"धर्म राय जिस घड़ी लेखा लयेगा, ज़रा कर सोच फिर तू क्या कहेगा।"***

  ☞ जब मृत्यु के बाद धर्मराज (यमराज) तेरे कर्मों का हिसाब लेंगे, तब तू क्या जवाब देगा?
- ***"वह सच्चे साफ़ साईं की कचहरी, न उसका है कोई मित्र न बैरी।"***

  ☞ उस परमात्मा की अदालत में न कोई मित्र है, न कोई शत्रु—वहां सिर्फ सत्य और कर्मों का हिसाब चलता है।
- ***"बड़ी मुश्किल बनेगी फिर तुझे वां, खता तेरी करें जमदूत औसां।"***

  ☞ वहां (मरणोपरांत) तुझे बड़ी कठिनाई होगी। तेरे पापों का हिसाब यमदूत करेंगे।
- ***"कोई न काम फिर बिन राम आवे, न तू उस राम को फिर क्यों ध्यावे।"***

  ☞ मृत्यु के समय कोई काम नहीं आएगा, केवल भगवान का नाम ही साथ देगा। इसलिए तू अभी से राम का स्मरण क्यों नहीं करता?
- ***"यह ताने तीन फिकरों के सहे जो, वह चौकी कदर पर फिर वो बहेजो।"***

  ☞ तीन फिकरों (लोभ, मोह, अहंकार) से मुक्त होकर जो भक्ति करता है, वही असली आनंद पाता है।
- ***"तू कर ले बंदगी और मान कहना, भजन में हर घड़ी हर पलक है रहना।"***

  ☞ इसलिए हे मनुष्य! तू बंदगी (ईश्वर-भक्ति) कर और किसी बहाने में मत पड़। हर पल, हर घड़ी भजन में लीन रह।

"अन्तर्मुखी होने की प्रेरणा"

- **"तन अंदर देख कलंदर तू, मन मंदिर जगत ज्वाला है।"**

  ☞ हे साधक! तू अपने शरीर के अंदर झाँक, आत्मा को पहचान। मन को ही असली मंदिर मान, बाहरी दुनिया एक अग्नि के समान है जो भटकाती है।
- **"गर खसम की बरकत चशम को हो, फिर पशम बराबर माला है।"**

  ☞ यदि ईश्वर की कृपा तेरी दृष्टि (नज़र) में आ जाए, तो भले ही तू रुई की डोरी जैसी साधारण माला जप ले, वह भी महान फल देने वाली हो जाएगी।
- **"सब बानी विद्या वेद कहें, उस जा का सर्र निराला है।"**

  ☞ सभी वेद, शास्त्र और विद्या एक ही बात कहते हैं — उस परमात्मा का नाम (जप) अद्वितीय है, बेमिसाल है।
- **"ऐ दास कपास का फूल खिला, जिसे देख शरमगीं लाला है।"**

  ☞ हे दास! जब आत्मा में भक्ति का फूल खिलता है, तो वह इतना पवित्र और सुंदर होता है कि संसार का 'लाल' (माणिक/रत्न) भी उसके सामने फीका पड़ जाता है।

"ईश्वर भक्ति का मार्ग"

"आप को खलक' में खलक को बखुद जाने, त्रिगुण अतीत है वेदांती असल में।"

☞ जिसने खुद को पहचाना, उसने ही सब प्राणियों में ईश्वर को जाना। सच्चा वेदांती वही है, जो तीन गुणों (सत्व, रज, तम) से ऊपर उठकर ईश्वर को जानता है।

"उपासना के बिना ज़ान नेष्टा नहीं पावत है, लज्ज़ते इश्क नहीं आवत अकल में।"

☞ बिना उपासना (भक्ति) के ज्ञान अधूरा है। केवल तर्क-बुद्धि से ईश्वर प्रेम (ईश्वर से इश्क) का आनंद नहीं मिलता।

"गूंगे की मिठाई नहीं, और को सुनाई देत; सुन्न में रंग रूप गगन महल में।"

☞ जैसे गूंगा मिठाई खाकर उसका स्वाद दूसरों को नहीं बता सकता, वैसे ही भक्ति और प्रेम का अनुभव केवल साधक को होता है, दूसरों को शब्दों से समझाया नहीं जा सकता।

"मन मांहि मंत्र ते सूरमा है चुन रख, छमा छम ज्योत है चमकती अटल में।"

☞ यदि मन में भक्ति का मंत्र जमा लिया जाए तो वह साधक को वीर बना देता है। उस भक्ति से आत्मा में अटल ज्योति चमक उठती है।

"झूठे हैं वेदांती जबान के हैं लापरी, अन्दर से हैं खाली जिने शोर है तबल में।"

☞ वे लोग झूठे हैं जो केवल उपदेश देते हैं, पर भीतर से खाली हैं। वे केवल बाहरी शोर (ढोल-ताशे) बजाते हैं लेकिन भीतर भक्ति नहीं होती।

"दास की है आस, एक नाम रहे पास; गले पल्ला देन्दी घास मूड़ साघड़ा जटल में।"

☞ दास (भक्त) की केवल एक ही आस है – ईश्वर का नाम हमेशा पास रहे। जैसे गाय को घास मिलते ही वह रस्सी छोड़ देती है, वैसे ही भक्त ईश्वर का नाम पकड़कर हर बंधन से मुक्त हो जाता है।

"आत्मा का राज़"

"अजब एक बार सुन सुन्न के सरोवर, दरां बिरवा बरां शाखें बरोंबर।"

☞ एक अद्भुत (अनूठा) "शून्य/सन्नाटा" का सरोवर है। उसके किनारे दो पेड़ हैं और दोनों पेड़ों की शाखाएँ बराबर-बराबर फैली हुई हैं।

"रहें दो हंस थे उस पर हमेशा, गोहर चुगने भजन करना था पेशा।"

☞ उस सरोवर पर दो हंस (प्रतीक: जीव और परमात्मा) रहते हैं। उनका काम मोती चुगना है, यानी आत्मा और ईश्वर का कार्य *भजन व भक्ति* करना है।

"कहीं किस्मत किनारी आन हारी, बला चारी कड़ीं मारी उडारी।"

☞ परंतु भाग्यवश आत्मा माया की ओर खिंच गई। माया ने उसे जकड़ लिया और वह विपत्तियों में फँसकर ऊपर उठने की शक्ति खो बैठी।

"फंसे सैयाद के दाम-ए-बला में, बड़े बेढ़ब पड़ी मुश्किल कला में।"

☞ जैसे कोई पक्षी शिकारी के जाल में फँस जाता है, वैसे ही आत्मा माया और सांसारिक बंधनों में फँस गई और बड़ी कठिनाई में पड़ गई।

"खुदी से बेखबर हो रोड़ चुगने, समझ बैठे कि कर बैठे हैं दुगने।"

☞ आत्मा खुद से बेखबर होकर मिट्टी (भौतिक वस्तुएँ, इच्छाएँ, लालच) चुगने लगी और सोचने लगी कि यही असली लाभ है। लेकिन यह धोखा था।

"गये वो आशियाना भूल भाई, किसी सुध-बुध न अब तक भोल आई।"

☞ आत्मा ने अपना असली घर (ईश्वर का धाम) भुला दिया और आज तक सुध-बुध वापस नहीं आई।

"गुरु कृपा व किस्मत का उजाला, हुआ आजिज पता पिछला संभाला।"

☞ लेकिन जब गुरु की कृपा और भाग्य से प्रकाश मिला, तब आत्मा को अपनी पुरानी स्थिति याद आई और संभलने का अवसर मिला।

"अगर जाहिल उमर भर खाक छाने, नहीं मुमकिन के रमज़े पाक जाने।"

☞ यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति जीवनभर संसार की धूल में भटकता रहे, तो वह आत्मा के इस शुद्ध रहस्य (ईश्वर-भक्ति और आत्मा का मिलन) को नहीं जान सकता।

"**आत्मा सो परमात्मा**"

"खुदी में खुदा देख गर चश्म है, यकीं राम रखा बकुन कसम है।"

☞ यदि तुम्हारी दृष्टि शुद्ध हो तो तुम *अपने ही भीतर खुदा (परमात्मा)* को देख सकते हो। यह सच्चाई है, इसमें कोई संदेह नहीं।

"बहु जरा जिगर जो जगे नूर-ए-जात, वही अमर प्रकाश दायम-उल-हयात।"

☞ जब हृदय में आत्म-ज्ञान का प्रकाश जग जाता है, तब वह अमर ज्योति (अनन्त जीवन देने वाला ईश्वर-प्रकाश) प्रकट होता है।

बसीना जिगर मुख्तसर वलेक, अज़ां जिस्म आँगुफ्त अंगुश्त एक ।

दिल (जिगर) तो बहुत छोटा-सा (मुख्तसर) है, लेकिन उसी के भीतर पूरा जिस्म (तन) समाया हुआ है, मानो एक ही उँगली (अंगुश्त) में सब कुछ बयान हो गया हो।

"तरक तीन त्रिकुटी है, तुरया की जा, इसे समझ लो सदर-उल-मिन्तहा।"

☞ जब साधक *त्रिकुटी* (दो भौंहों के बीच का स्थान, आज्ञा चक्र) पर दृष्टि टिकाकर *तुरिया अवस्था* (चौथी अवस्था, गहन ध्यान) में पहुँचता है, तब वह परम शांति और ईश्वर-दर्शन की ओर बढ़ता है।

यह तिरया बिया हे तो तुरया मिले,रखे दृष्टि में फिर न मुतलक हिले।
अगर साधक *तीसरी अवस्था (तुरिया)* को प्राप्त कर लेता है, तो वह परमात्मा से मिलन को पा लेता है। और जब उसकी दृष्टि उस सत्य (ईश्वर) पर स्थिर हो जाती है, तब वह कभी विचलित नहीं होती।

बबालाए त्रिकुटी हों दो सुर एक, ज़ गुर जुगत लेकर जतन फिर देख।
जब साधक *त्रिकुटी* (दो भौंहों के बीच का स्थान, आज्ञा चक्र) पर मन को टिकाता है, तो दोनों सुर (इड़ा और पिंगला नाड़ी) एक हो जाते हैं और साधक तीसरे सुर यानी *सुषुम्ना* में प्रवेश करता है। गुरु की बताई हुई जुगत (साधना की विधि) को अपनाकर यदि मनुष्य प्रयास करे, तो उसे इसका अनुभव हो सकता है।

"दो नैनों मुकाबिल दो अबरू तले, है शीरीं सी धुन, जोत जगमग जले।"

☞ जब साधक अपनी दृष्टि दोनों भौंहों के बीच टिकाता है, तो भीतर मधुर ध्वनि (आनंदमय अनहद नाद) सुनाई देती है और दिव्य प्रकाश प्रकट होता है।

है मस्तक महल की तो नक सोद बाट, छुटेगी त्रिकुटी खुलेंगे कपाट।
मानव शरीर को एक महल की तरह माना गया है। इस महल का *मुख्य द्वार* मस्तक (भौंहों के बीच त्रिकुटी स्थान) पर है। जब साधक ध्यान द्वारा इस त्रिकुटी बिंदु को पार कर लेता है, तब आत्मा के लिए *कपाट* (ईश्वर के दरवाज़े/आध्यात्मिक द्वार) खुल जाते हैं।

"महल तीन कर त्याग चौथे चढ़े, कवँल दल सहंसर से अमृत झड़े।"

☞ जब साधक तीन अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति) को पार करके *चौथी अवस्था* (तुरिया) में प्रवेश करता है, तो सहस्रार चक्र (सिर के शीर्ष पर कमल) से दिव्य अमृत की वर्षा होती है।

"खुले वाणी अनुभव का फिर यार मन, रहे शान्त मन चित्त सुरत बुध बदन।"

☞ उस अवस्था में साधक का मन शांति को प्राप्त होता है, आत्मा अनुभव करती है और चेतना स्थिर हो जाती है।

"अजब घोर घनघोर है नाद की, यह जा जानने की न बकवाद का।"

☞ भीतर सुनाई देने वाला अनहद नाद (आत्मिक ध्वनि) बहुत अद्भुत और गहन है। इसे केवल अनुभव किया जा सकता है, शब्दों से पूरी तरह समझाया नहीं जा सकता।

"पकड़ ओट ली नाद की जब फकीर, हुआ दर्स तब शाह का दस्तगीर।"

☞ जब साधक (फकीर) उस नाद को पकड़ लेता है, तब उसे ईश्वर का दर्शन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

"बिलौरी सी सूरत का नूरी सा रंग, चढ़े नयन ऊपर को चूँ पतंग।"

☞ तब भीतर ईश्वर का प्रकाश (ज्योति) बिलकुल क्रिस्टल जैसी निर्मल और चाँदनी जैसी उज्ज्वल दिखाई देता है।

"जो नैनों से बाहर सो नैनों के बीच, मिले जोत ज्योति भया अश्क कीच।"

☞ जब दृष्टि बाहर से हटाकर भीतर केंद्रित होती है, तब आत्मा (ज्योति) और परमात्मा (ज्योति) का मिलन होता है। यह मिलन आनंदाश्रुओं (आँसुओं) के रूप में प्रकट होता है।

है अकबर अकाबर का दर्श जहाँ , हो दरस जब से बदिल कह कहा ।
इसमें कहा गया है कि ईश्वर (अकबर = सबसे महान, परमात्मा) का दर्शन ही सबसे बड़ा और श्रेष्ठ दर्श (दर्शन/दृश्य) है।
जब से हृदय (दिल) के भीतर उसका दर्शन होता है, तब से मनुष्य के दिल की बात बदल जाती है — यानी भीतर से रूपांतरित हो जाता है।

"सुनो खोलकर कान कल्याण दास, कहे बस मोहब्बत से नारायण दास।"

☞ ओम जी कहते हैं— हे साधक! गुरु वचनों पर अमल कर, और प्रेम के साथ भक्ति में लीन हो। यही असली ज्ञान है।

कहा दास ने कर अमल गुरु वचन, बताया गुरु सिंह ज्वाला जतन ।
भक्त (दास) कहता है कि जब उसने गुरु के वचनों पर अमल किया, तब गुरु ने उसे *सिंह समान बल* और *ज्वाला समान तेज* का साधन बताया।

असल ज्ञान इन चन्द अश आर का , करें शुद्ध सीना नरोनार का ।

इन कुछ अशआर (पंक्तियों/शेरों) का असली ज्ञान यही है कि ये मनुष्य (नर-नारी) के हृदय (सीना) को शुद्ध और पवित्र बना देते हैं।

योग साधना की विधि -

"सहज सहज में याद रख लीजिए"

☞ साधना कोई कठिन कार्य नहीं है। इसे *सहज भाव* से करना चाहिए। यानी स्वाभाविक और सरल ढंग से, बिना जोर-जबर्दस्ती के।

“नाक की ताक बेबाक देखो”

☞ ध्यान करते समय दृष्टि को *नाक के सिरे (त्रिकुटी / भृकुटि के बीच)* पर केंद्रित करो। यही ध्यान का स्थान है।

“चक्ष को रख दम सद कर भख, फिर जोत अलख चालाक देखो”

☞ अपनी आँखों को स्थिर करो, दृष्टि को बार-बार भटकने मत दो। जब दृष्टि अडिग हो जाती है तो भीतर *अलख (अदृश्य) ज्योति* का दर्शन होने लगता है।

“सुन्न की सार करतार जी, तरस कर जी, करेगा दास का पाक लेखो”

☞ जब साधक ध्यान करते हुए *सुन्न मंडल* (शून्यता, जहाँ बाहरी आवाज़ें नहीं पहुँचती) में प्रवेश करता है, तो वहाँ दिव्य नाद (आत्मिक ध्वनि) सुनाई देती है। उस पर ध्यान टिकाने से मन निर्मल होता है और ईश्वर की कृपा मिलती है।

“कड़क से धड़क मच जाये आकाश में, दुनी में दास की हाक देखो।”

☞ जब साधक ध्यान में लीन होता है, तो भीतर दिव्य अनहद नाद (गर्जन जैसी ध्वनि) गूँजता है। यह आकाश में बिजली जैसी गूँज प्रतीत होती है। उस समय साधक की आत्मा ऊँचे स्तर पर पहुँचती है और संसार (दुनिया) भी उसकी साधना की शक्ति को अनुभव करता है।

चंचल मन-

“मन मंदर में इक अंदर है, तिस अंदर बसत कलंदर है।”

☞ शरीर रूपी मंदिर में एक *मन* है। उसी मन के भीतर *कलंदर (परमात्मा का स्वरूप/आत्मा)* निवास करता है।

“उस अंदर देख यतंदर तू, इक पास कलंदर बन्दर है।”

☞ जब ध्यान से भीतर देखते हो तो पाते हो कि *कलंदर (परमात्मा)* के पास ही *बंदर (मन)* बैठा हुआ है।

“अति चंचल चपल चालाक चतुर, झट बाहर झटा पट अंदर है।”

☞ यह मन बिल्कुल *बंदर* की तरह है—बहुत चंचल, चालाक और फुर्तीला। कभी बाहर भाग जाता है, कभी अंदर, स्थिर नहीं रहता।

“लिया बन्दर घेर कलंदर को, बस बंदर दास मछंदर है।”

☞ जब मन (बंदर) को साधक नियंत्रित कर लेता है और उसे आत्मा (कलंदर) के अधीन कर देता है, तभी वह सफल साधना करता है।

“दी ज्ञान गुलेल गुरां हम को, घर गोली सुरत निसान किया।”

☞ सतगुरु ने साधक को *ज्ञान रूपी गुलेल* (युक्ति, साधना की विधि) दी। इसमें *गोली सुरत* (ध्यान की शक्ति) को बनाया और लक्ष्य (निशाना) भीतर की ओर लगाया।

“धन धनुष पकड़ जब दास चढ़े, तब जुगत जतन का बान किया।”

☞ जब साधक गुरु के बताए हुए साधना-धनुष को पकड़कर अभ्यास करता है, तो ध्यान रूपी बाण भीतर जाता है और मन को वश में करता है।

“गया भाग वह बंदर अंदर से, इक आन में बान हैरान किया।”

☞ जैसे ही यह बाण (ध्यान की शक्ति) लगता है, मन-बंदर तुरंत भाग जाता है और उसकी चंचलता शांत हो जाती है।

"बलिहार मैं बार हजार तेरे, जिस ज्ञान कमान का दान किया।"

☞ साधक कहता है—हे गुरु! मैं आपके ज्ञान-कमान (ध्यान की साधना की विधि) पर हजार बार बलिहार जाता हूँ, जिसने मेरे मन रूपी बंदर को वश में कर दिया।

"आत्म-ज्ञान द्वारा ईश्वर प्राप्ति"

"खुदी ताकी नहीं, ताका खुदा को, न कांशी को वले इक पेशवा को।"

☞ जब तक इंसान *खुदी (आत्मा/स्वयं को पहचानना)* नहीं देखता, तब तक वह *खुदा (ईश्वर)* को नहीं देख सकता। न ही कोई काशी (तीर्थ) और न ही कोई धार्मिक अगुवा (पेशवा) ईश्वर तक पहुँचा सकता है।

"खुदी ताकी, खुदा ताका गया जी, गुरु ताका गया, खुदा ताका गया जी।"

☞ जब इंसान अपनी *खुदी (आत्मा)* को देख लेता है, तब वही अनुभव उसे *खुदा (ईश्वर)* तक पहुँचा देता है। गुरु का मार्ग ही वास्तव में ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है।

"खुदी को ताकना मंज़ूर गर हो, तो पुतली पार हो, खूनी नज़र हो।"

☞ अगर साधक भीतर *खुदी (आत्मा)* को देखने के लिए तैयार हो जाए, तो उसे अपनी दृष्टि बहुत गहरी और पैनी करनी होगी—जैसे आँख की पुतली से भीतर तक देखना।

"नज़र बारीक बन बिजली चमके, ढला ढल नूर कुन्दन क्या दमके।"

☞ जब साधक की नज़र गहरी और सूक्ष्म हो जाती है, तो उसे भीतर *बिजली जैसी ज्योति* दिखाई देती है। यह दिव्य प्रकाश किसी हीरे-जवाहरात से भी अधिक चमकदार होता है।

"अभी ऊँचा मकान करतार का है, जो मालिक जिस्म के घर-बार का है।"

☞ उस समय साधक समझ जाता है कि उसके भीतर (शरीर-घर में) एक *ऊँचा मकान है—वही ईश्वर (कर्तार)* का निवास स्थान है।

"अगर जाहिल उम्र भर खाक छाने, नहीं मुमकिन कि रम्ज़े पाक जाने।"

☞ लेकिन जो व्यक्ति अज्ञान में डूबा रहता है और बाहर-बाहर ही खोजता है, वह चाहे पूरी ज़िंदगी तपस्या करे या तीर्थ घूमे, वह कभी भी ईश्वर के उस पवित्र रहस्य (रम्ज़) को नहीं जान सकता।